स्वच्छता की प्रेरणा स्त्रोत बनी खुश्बू

नाम- खुश्बू कुमारी

छात्रा- कक्षा 5

प्राथमिक विद्यालय, मीरचक

ग्राम- मीरचक, पंचायत- देवरिया

प्रखंड- मसौढ़ी, ज़िला-पटना, बिहार।

पटना ज़िला स्थित मसौढ़ी प्रखंड के देवरिया पंचायत के मीरचक गांव की रहने वाली खुश्बू कुमारी अपने गांव में प्रेरणा स्त्रोत बन कर उभरी हैं। महज पांचवीं कक्षा की छात्रा खुश्बू की सजगता और स्वच्छता के प्रति जागरुकता की खूब चर्चा हो रही है।

खुश्बू कुमारी एक अति साधारण ग्रामीण परिवार से आती हैं। उनके पिता मज़दूरी करते हैं और मां रसोइया का काम करती हैं। प्राथमिक विद्यालय मीरचक के पांचवीं कक्षा की छात्रा खुश्बू के घर में शौचालय नहीं था। वो और उसके परिवार के सभी सदस्य खुले में शौच के लिए जाने को विवश थे। इस बात पर खुश्बू को खासी अपत्ति थी। उसे खुले में शौच के लिए जाना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। अपने माता-पिता से वो समय-समय पर शौचालय बनवाने के लिए आग्रह करती थी, लेकिन छोटी बच्ची की बातों को उसके माता- पिता गंभीरता से नहीं लेते थे। उसके आग्रह को वो बहला फुसला कर टाल दिया करते थे।

अपने आग्रह की लगातार हो रही उपेक्षा से खुश्बू काफी आहत होती जा रही थी। खुले में शौच के लिए जाना उसे बेहद आपत्तिजनक लगता था। अंतत: इस छोटी बच्ची ने एक बड़ा फैसला लिया की किसी भी सूरत में वो अपनी बात मनवा कर ही दम लेगी। खुश्बू कुमारी ने स्कूल जाना और भोजन करना अचानक बंद कर दिया। उसके इस कदम से माता पिता परेशान हो गए। वे अपनी बिटिया से ज़िद छोड़ने का आग्रह करने लगे लेकिन खुश्बू ने ये साफ कर दिया वो तभी मानेगी जब उसके घर में शौचालय बनेगा। अपनी होनहार बेटी की हठ के आगे माता-पिता को आखिर झुकना ही पड़ा। उन्होनें किसी तरह पैसे का इंतज़ाम कर अपने घर में शौचालय का निर्माण करवाया।

खुश्बू के इस कदम का उसके गांव में खासा प्रभाव पड़ा। उसकी मुहीम से प्रभावित होकर उसके विद्यालय के अन्य छात्र-छात्रा भी अपने अपने घरों में शौचालय बनवाने की मांग करने लगे हैं। खुश्बू कुमारी को उसकी पहल के लिए पुरस्कृत करने हेतु प्रखंड विकास पदाधिकारी उसके घर आए औऱ निजी तौर पर पांच सौ रुपये का नगद पुरस्कार दे कर उसे प्रोत्साहित किया। इस क्रांतिकारी पहल के लिए खुश्बू को राजधानी पटना में एक कार्यक्रम में सचिव, ग्रामीण विकास विभाग एवं लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान के मिशन निदेशक द्वारा पुरस्कृत किया गया।

खुश्बू अपने इलाके में स्वच्छता की प्रेरणास्त्रोत बन कर उभरी है, वो अपने गांव के लोगों को शौचालय बनवाने के लिए प्रेरित कर रही है। उसे विश्वास है कि बहुत जल्द उसका गांव खुले में शौच से मुक्त होगा।